Think IAS

दृष्टि The Vision

Think Drishti

इतिहास

वैकल्पिक विषय

द्वारा- श्री अख्तर मलिक

(लेखक- विश्व इतिहास, आधुनिक
एवं प्राचीन भारतीय इतिहास)

Tashkent Marg, Patrika Chauraha, Civil Lines, Prayagraj
Contacts: 8448485518, 8750187501, 8929439702
Website : www.drishtiias.com

इतिहास (मुख्य परीक्षा)

दृष्टिकोण एवं रणनीति

1. विषय का चयन

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) एवं राज्य लोक सेवा आयोगों की परीक्षाओं में सफलता के लिये सर्वप्रथम और सर्वप्रमुख चरण है- सही वैकल्पिक विषय का चयन। सही वैकल्पिक विषय का चयन सफलता के मार्ग को आसान बना देता है। अतः वैकल्पिक विषय के चयन में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। वैकल्पिक विषय का चयन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अत्यावश्यक है-

- विषय के अध्ययन के लिये किसी विशेष 'दक्षता' या डिग्री की ज़रूरत न हो अर्थात् विषय की प्रकृति विशेषीकृत न हो, बल्कि सामान्यीकृत हो।
- विषय की अध्ययन सामग्री आसानी से उपलब्ध हो।
- विषय में सामान्य अध्ययन का सहायक विषय बनने की क्षमता हो।
- विषय परीक्षा की दृष्टि से सुरक्षित (Safe) अथवा न्यूनतम जोखिम वाला, अंकदायी एवं चयन में सहायक हो।
- विषय के अध्ययन में 'भाषा' का महत्त्व नगण्य हो अर्थात् विषय हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं के परीक्षार्थियों के लिये समान हो।
- विषय व्यक्तित्त्व के विकास में सहायक हो।
- विषय रुचिकर हो। किन्तु यहाँ इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि यदि 'रुचिकर' और 'अंकदायी' में प्राथमिकता की बात आए तो 'अंकदायी' होने को प्राथमिकता देकर विषय का चयन करना चाहिये।
- विषय में सफलता का प्रतिशत अधिक हो।
- विषय ऐसा हो जो शहरी-ग्रामीण परीक्षार्थियों में कोई अंतर न करे। अर्थात् यदि कोई विद्यार्थी उस विषय को शहर में रहकर पढ़े या ग्राम में, इस बात का 'अंक' पर कोई प्रभाव न पड़े।

2. इतिहास : एक श्रेष्ठ वैकल्पिक विषय

सिविल सेवा परीक्षा के लिये वैकल्पिक विषय के चयन हेतु ऊपर जिन अत्यावश्यक बातों पर चर्चा की गई है, वे सभी इतिहास के संदर्भ में पूरी तरह से लागू होती हैं, जैसे-

- इतिहास एक ऐसा विषय है जिसे मुख्य परीक्षा में रखकर सर्वाधिक छात्र सफल होते हैं।
- एक वैकल्पिक विषय के रूप में इतिहास का अध्ययन करने के लिये यह ज़रूरी नहीं है कि आपने इस विषय को 'डिग्री' स्तर पर पढ़ा ही हो। किसी भी संकाय (कला/विज्ञान/वाणिज्य) के छात्र इस विषय का चयन करके अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं। इसमें जटिल सैद्धांतिक पक्षों का अभाव है, अतः इसे कोई भी सामान्य छात्र पढ़ सकता है।
- सामान्य अध्ययन के एक सहायक विषय के रूप में 'इतिहास' की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण है। प्रारम्भिक परीक्षा के सामान्य अध्ययन में लगभग 18-20 प्रश्न इतिहास से ही पूछे जाते हैं और प्रश्नों की प्रकृति आजकल ऐसी रहती है कि दूसरे विषय के छात्र को हल करना थोड़ा कठिन होता है जबकि इतिहास विषय के छात्र इन प्रश्नों को आसानी से हल करके G.S. में अन्य छात्रों से बढ़त ले सकते हैं।
- सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में सामान्य अध्ययन के प्रश्न-पत्र में भी इतिहास की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 250-300 अंकों की भागीदारी देखी जा सकती है। गौर करने की बात यह है कि वर्ष 2013 से मुख्य परीक्षा में सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र में विश्व इतिहास का खंड भी जुड़ गया है। अतः यहाँ पर भी इतिहास विषय के अभ्यर्थी लाभप्रद स्थिति में हैं।
- इतिहास एक ऐसा विषय है जो हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों ही माध्यम के छात्रों के लिये समान रूप से अंकदायी है।
- मुख्य परीक्षा में इतिहास के प्रथम प्रश्न-पत्र में मानचित्र आधारित प्रश्न होने से इस प्रश्न-पत्र में 160-170 अंक आसानी से प्राप्त किये जा सकते हैं।
- इतिहास विषय से पिछले तीन वर्षों में कई अभ्यर्थी 250 से भी अधिक अंक प्राप्त कर अपनी सफलता सुनिश्चित कर चुके हैं। इससे पूर्व भी विद्यार्थी 300 से अधिक अंक प्राप्त कर (जब पूर्णांक 600 होता था) अपनी सफलता सुनिश्चित करते रहे हैं। प्रांतीय सिविल सेवा के लिये भी यह विषय अंकदायी रहा है।
- इतिहास के अध्ययन से भारत सहित विश्व के महान व्यक्तियों एवं उनके कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है और यह जानकारी अभ्यर्थी के व्यक्तित्त्व के विकास में महती भूमिका निभाती है।
- सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इतिहास एक भरोसेमंद विषय है। आपके प्रयास व प्रस्तुति के अनुपात में उचित अंक आपको अवश्य मिलते हैं। अतः अंक के स्तर पर यह विषय आपको धोखा देने वाला नहीं है।

3. इतिहास विषय से जुड़े कुछ भ्रम

- इतिहास तथ्यों का संकलन है और इन तथ्यों को याद करना दुष्कर कार्य है।
- इतिहास विषय का पाठ्यक्रम बहुत लंबा है। अतः इसे पूरा पढ़ पाना और याद कर पाना असंभव है।
- इतिहास में बहुत सारी विचारधाराएँ हैं और उन विचारधाराओं पर विवाद की स्थिति है। अतः किस विचारधारा के आधार पर इतिहास पढ़ा और लिखा जाए ताकि परीक्षक प्रसन्न होकर अच्छे अंक दे सके?
- इतिहास को समझने के लिये इसका अकादमिक अध्ययन ज़रूरी है।

4. उपर्युक्त धारणाएँ विशुद्ध भ्रम हैं; क्योंकि

- भ्रम अज्ञानता से पैदा होता है और जब यह अज्ञानता किसी विषय से संबंधित हो जाती है तो उस विषय के संदर्भ में भ्रम होना स्वाभाविक

है। अतः भ्रम के निवारण हेतु उस विषय के संदर्भ में सही ज्ञान का होना ज़रूरी है और सही ज्ञान योग्य मार्गदर्शक ही दे सकता है।

- इतिहास में तथ्य ज़्यादा ज़रूरी हैं किन्तु ये सभी तथ्य किसी न किसी Concept से जुड़े होते हैं, अतः Concept के साथ तथ्यों को याद रखना काफी आसान हो जाता है।
- जहाँ तक विचारधाराओं की बात है, वे केवल इतिहास में ही नहीं अपितु अन्य कई विषयों में भी हैं, जैसे- हिन्दी साहित्य में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि की विचारधारा। इसी प्रकार दर्शनशास्त्र में ब्रह्म, जीव, जगत के संबंध में शंकराचार्य, रामानुजाचार्य एवं माध्वाचार्य आदि की विचारधाराएँ। विचारधाराओं के संबंध में कुछ बातें समझ लेना ज़रूरी है-
    - ◆ विचारधाराओं की अधिकता विषय की समझ को विकसित करने में सहायक होती है, बाधक नहीं।
    - ◆ विचारधाराओं के कारण विषय के प्रति दृष्टि व्यापक और तार्किक हो जाती है और बातों को देखने-समझने का नज़रिया वैज्ञानिक हो जाता है।
    - ◆ सिविल सेवा परीक्षा के अभ्यर्थियों के लिये यह जानना ज़रूरी है कि उन्हें अच्छे अंक विषय के ज्ञान व उसके तार्किक और क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण के आधार पर मिलते हैं, न कि किसी एक खास विचारधारा को अपनाकर परीक्षक को प्रसन्न करके।
- इतिहास को पढ़ने और समझने के लिये अकादमिक अध्ययन की बात एकदम निर्मूल है क्योंकि प्रतिवर्ष विज्ञान वर्ग के अनेक अभ्यर्थी इस विषय को लेकर अच्छे अंक प्राप्त करते हैं।
- जहाँ तक पाठ्यक्रम के विस्तृत होने की बात है तो यह सही है कि देखने में यह विस्तृत है, किन्तु गौर से देखें तो बहुत से बिन्दुओं का स्पष्ट अंकन करने के कारण पाठ्यक्रम लंबा हो गया है। यदि इन बिन्दुओं को क्रमबद्ध और वैज्ञानिक पद्धति से समंजित करके अध्ययन किया जाए तो पाठ्यक्रम का आकार काफी छोटा हो जाता है।
- जहाँ तक पाठ्यक्रम को पूरा पढ़ने और याद करने की बात है तो यह मार्गदर्शक पर निर्भर करता है कि पाठ्यक्रम को कैसे समग्रता से व्यवस्थित कर आपके लिये सहज स्मरणीय बना सके। पाठ्यक्रम के विषय में और चर्चा पाठ्यक्रम के विश्लेषण के बिन्दुओं के अंतर्गत की गई है।
- और अंत में, कम अंकों की प्राप्ति विषय की नहीं बल्कि व्यक्तिगत समस्या है। यदि विषय की प्रकृति के कारण कम अंक मिलते तो फिर कई अभ्यर्थियों के 300 से ज़्यादा अंक कैसे आते? मूल बात यह है कि प्रारम्भिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद मुख्य परीक्षा में शामिल होने वाले अभ्यर्थी तथ्यों की जानकारी के स्तर पर लगभग समान होते हैं। इन अभ्यर्थियों में अच्छे अंक वही प्राप्त कर पाता है जो प्रश्नों के उत्तर नियत समय व निर्धारित शब्द सीमा में विषयवस्तु को क्रमबद्ध, आकर्षक शैली, सहज भाषा और अन्तर-क्रियात्मक पद्धति से लिखता है। वस्तुतः अधिकतम अंक की प्राप्ति तो सम्यक् मार्गदर्शन पर निर्भर करती है।

5. पाठ्यक्रम तथा परीक्षा प्रणाली का विश्लेषण

- **मुख्य परीक्षा की प्रकृति**
    - ◆ मुख्य परीक्षा के लिये पाठ्यक्रम और रणनीति पर विचार करने से पूर्व मुख्य परीक्षा की प्रकृति पर चर्चा करना न केवल वांछनीय है बल्कि अनिवार्य भी है। मुख्य परीक्षा में सफलता तभी मिल सकती है जब इसकी प्रकृति को सही तरह से समझ लिया जाए।
    - ◆ मुख्य परीक्षा का उद्देश्य मूलतः अभ्यर्थी के अभिव्यक्ति कौशल का परीक्षण करना है। चूँकि अभ्यर्थी के ज्ञान व याददाश्त का परीक्षण प्रारम्भिक परीक्षा में हो चुका होता है। अतः मुख्य परीक्षा में अभ्यर्थी के प्रस्तुतीकरण, लेखन शैली, दृष्टिकोण व समझ को परीक्षण प्रक्रिया के केंद्र में रखा जाता है।
    - ◆ इसी प्रकृति को न समझने के कारण अधिकांश छात्र केवल तथ्यों और उनके विश्लेषण को रटते रहते हैं और अन्ततः परीक्षा में बहुत कम अंक प्राप्त कर पाते हैं।
    - ◆ प्रायः ऐसा देखा गया है कि कई अभ्यर्थी कठिन परिश्रम करते हुए बहुत सारी पाठ्य सामग्री का अध्ययन करते हैं, फिर भी कम अंक प्राप्त करते हैं। जबकि कुछ अभ्यर्थी तुलनात्मक रूप से कम समय व परिश्रम में भी अच्छे अंक प्राप्त कर लेते हैं। इस अंतर का मूल कारण मुख्य परीक्षा की प्रकृति में ही निहित है।
    - ◆ अतः मुख्य परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने के लिये इसकी प्रकृति के अनुरूप प्रस्तुतीकरण, लेखन शैली एवं समझ पर विशेष बल देने की ज़रूरत है।
- **परीक्षा प्रणाली का विश्लेषण**
    - ◆ वर्ष 2013 से UPSC ने सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम में परिवर्तन करते हुए प्रत्येक वैकल्पिक विषय के लिये 500 अंक निर्धारित कर दिये हैं। प्रत्येक प्रश्न-पत्र 250 अंक का है।
    - ◆ वर्ष 2013 से, विशेषकर वैकल्पिक विषय में प्रश्नों के अंक व उत्तर की शब्द सीमा में कुछ बदलाव आया है। वस्तुतः 60 अंक के एक प्रश्न की बजाय अब 15, 15 एवं 20 (कुल अंक 50) अंक के तीन प्रश्न भी पूछे जा रहे हैं। ऐसे बदलाव का उद्देश्य है परीक्षार्थी की समझ और समग्र अध्ययन की क्षमता का आकलन करना। अतः अब चयनात्मक अध्ययन और भी खतरनाक हो गया है।
    - ◆ यह बदलाव अंक प्राप्ति की दृष्टि से सकारात्मक है। ऐसे प्रश्नों को हल करने के लिये थोड़ी जानकारी भी पर्याप्त होती है। इसलिये समग्र पाठ्यक्रम का अध्ययन UPSC में चयन के लिये अपरिहार्य हो गया है।
    - ◆ इतिहास विषय के प्रथम प्रश्न-पत्र का पहला प्रश्न 50 अंकों का एवं मानचित्र पर आधारित होता है। इसमें मानचित्र पर स्थान विशेष को चिह्नित कर उसका लगभग 30 शब्दों में विवरण देना होता है। मानचित्र पर स्थान अंकित रहता है और उसकी पहचान कर विवरण लिखना होता है। इस तरह के 20 स्थान अंकित रहते हैं और प्रत्येक 2.5 अंक का होता है। इस प्रश्न में थोड़े से प्रयास से 40 अंक तक प्राप्त किये जा सकते हैं।
    - ◆ प्रश्नपत्र एक के खण्ड 'ख' में पाँच टिप्पणियाँ होती हैं। अभ्यर्थियों को इन सभी का उत्तर देना होता है। प्रत्येक टिप्पणी 10 अंकों की होती है और इसे लगभग 150 शब्दों में लिखना होता है। इन टिप्पणियों में भी अंक प्रायः गणितीय पद्धति के अनुरूप ही मिलते हैं, अर्थात् सटीक टिप्पणी लेखन से प्रत्येक

में 6-8 अंक तक प्राप्त किये जा सकते हैं। इस प्रकार, टिप्पणी वाले प्रश्नों में भी 30-40 तक अंक प्राप्त किये जा सकते हैं।

- ◆ अब बात लघु उत्तरीय प्रश्नों की आती है। प्रथम प्रश्न-पत्र के दोनों खण्डों को मिलाकर 9 लघु उत्तरीय प्रश्न होते हैं, जिनमें से दोनों खण्डों को मिलाकर कुल तीन प्रश्नों के उत्तर लिखने होते हैं। प्रत्येक प्रश्न के तीन उपखंड (a, b एवं c) होते हैं जो क्रमशः 15, 15 एवं 20 अंक के होते हैं अर्थात् तीन प्रश्नों के पूर्णांक 150 हुए।
- ◆ इसी प्रकार, द्वितीय प्रश्न-पत्र में भी दोनों खण्डों को मिलाकर 10 टिप्पणियाँ लिखनी होती हैं (प्रत्येक 10 अंक)। इसमें भी 60-70 अंक तक प्राप्त किये जा सकते हैं।
- ◆ परिवर्तन के दौर में यह भी संभावना है कि प्रश्नों की खण्डवार सीमा अब टूट जाए अर्थात् प्रथम प्रश्न-पत्र में (a) प्राचीन भारतीय इतिहास का प्रश्न हो तो (b) मध्यकालीन इतिहास से संबंधित। इसी प्रकार, द्वितीय प्रश्न-पत्र में (a) आधुनिक भारतीय इतिहास से संबंधित हो तो (b) विश्व इतिहास से संबंधित। अतः परीक्षार्थी को अब ऐसे संभावित बदलाव को ध्यान में रखकर तैयारी करनी चाहिये।

- ● **प्रश्नों का चयन**
  - ◆ जहाँ तक बात प्रश्नों के चयन की है, इस संबंध में किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह रखना अत्यन्त जोखिम-भरा हो सकता है। यह पूर्वाग्रह इस बात को लेकर है कि प्रथम प्रश्न-पत्र के खण्ड 'क' से तीन तथा खण्ड 'ख' से दो प्रश्न करने चाहियें। इसी प्रकार द्वितीय प्रश्न-पत्र के खण्ड 'क' से दो व खण्ड 'ख' से तीन प्रश्न करने चाहियें।
  - ◆ खण्डों के चयन में इस प्रकार का पूर्वाग्रह रखना गलत है क्योंकि यह रणनीति आपको अनिवार्य रूप से चयनात्मक होने को मजबूर करती है। समस्या तब जटिल हो जाती है जब आपको सोचे हुए खण्डों में किसी प्रश्न का उत्तर इस प्रकार लिखना पड़ जाए जिसके प्रति आपकी समझ गहरी नहीं है। ऐसी स्थिति में आप पूरी प्रतियोगिता से बाहर होने के लिये अभिशप्त हो जाएंगे। इस स्थिति से बचने का एक ही तरीका है कि किसी निर्मूल धारणा के प्रति पूर्वाग्रही न बनें।
  - ◆ प्रायः परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों की प्रकृति आत्मनिष्ठ (Subjective) तथा वस्तुनिष्ठ प्रकार की होती है। जिन प्रश्नों के उत्तर में वस्तुनिष्ठता (Objectivity) की अपेक्षा हो उनमें अधिक अंक मिलते हैं। उदाहरण के लिये -"इतिहास को जानने के विभिन्न स्रोतों का वर्णन कीजिये।" "सिंधु सभ्यता के नगरीकरण के तत्त्वों का उल्लेख करते हुए नगर-निर्माण योजना की विशेषताएँ बताइये।" फ्राँस की क्रांति के कारणों का वर्णन कीजिये आदि।
  - ◆ इस प्रकार प्रश्नों के चयन में सर्वप्रथम उन प्रश्नों के उत्तर लिखने को प्राथमिकता देनी चाहिये जिनकी प्रकृति वस्तुनिष्ठ प्रकार की हो। इसके बाद आत्मनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों में उन प्रश्नों का चयन करना चाहिये जिनमें विवाद की गुंजाइश कम हो और जो तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित हों।

- ● **परीक्षा की तैयारी**
  - ◆ विगत वर्षों में कुछ पूछे गए प्रश्नों की प्रकृति, प्रश्नों के पैटर्न तथा विषय-विस्तार के दृष्टिकोण से आवश्यक है कि-
    1. संपूर्ण पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन किया जाए। साथ ही अध्ययन का उपागम (Approach) विस्तीर्ण (Extensive) तथा गहन (Intensive) दोनों होना चाहिए।
    2. तथ्यपरक अध्ययन के साथ विश्लेषणात्मक अध्ययन पर विशेष बल देना चाहिये।
    3. अद्यतन प्रश्नों पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि UPSC का बल अंतर-अनुशासनात्मक (Inter disciplinary) उपागम पर अधिक रहा है। अतः आवश्यक है कि इतिहास को अन्य विषयों से संबद्ध करके संश्लिष्ट अध्ययन किया जाए।
    4. UPSC में पूछे गए प्रश्नों के निहितार्थ के दृष्टिकोण से आवश्यक है कि इतिहासलेखन की नवीनतम विधाओं जैसे- उपाश्रयवादी (Subaltern), जनवादी, नारीवादी विशेषकर उपाश्रयवादी लेखन दृष्टि एवं चिंतन दृष्टि विकसित करें। उदाहरणार्थ निम्न प्रश्नों पर ध्यान दें-

    "वैदिक स्रोतों से मानव आवासों के विषय में जो सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, उनका विश्लेषण कीजिए।" *(UPSC, 2013)*

    "भारत छोड़ो आंदोलन को स्वतः स्फूर्त आंदोलन कहना या गांधीवादी आंदोलनों का चरम बिंदु कहना उसकी आंशिक व्याख्या होगी।" *(UPSC, 2015)*

    ऐसे प्रश्नों का विश्लेषण करने के उपरांत स्पष्ट हो जाता है कि छात्रों को भिन्न-भिन्न टॉपिक पर गहन अध्ययन, सूक्ष्म विश्लेषण और बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। आशा करते हैं कि दृष्टि IAS के कक्षा कार्यक्रम में हम आपकी इन उम्मीदों पर खरे उतरेंगे।

- ● **कार्य योजना बनाना**
  1. परीक्षा में सफल होने के लिये एक सटीक, योजनाबद्ध और वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित कार्य योजना की नितान्त आवश्यकता होती है।
  2. इस कार्य योजना में आवश्यक संसाधन (Resources), एक रणनीति (Strategy), समयानुकूल पर्यवेक्षण (Supervision), सम्यक निष्पादन (Execution) और एक तय समय सीमा (Time Shedule) जैसे मूलभूत सिद्धांत शामिल होते हैं। कार्य योजना में समय प्रबंधन सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। अर्थात् यह पता होना चाहिये कि कब क्या करना है, कब तक करना है, कैसे करना है, कितना करना है? इसी समय प्रबंधन के कारण एक अभ्यर्थी और दूसरे अभ्यर्थी के अंकों में अंतर आ जाता है।
  3. मुख्य परीक्षा की तैयारी का अर्थ है- रणनीतिपूर्वक पाठ्यक्रम का अध्ययन एवं उस अध्ययन की तर्कपूर्ण शैली में अभिव्यक्ति।

  - ◆ **आदर्श पाठ्यक्रम बनाना**
    1. सर्वप्रथम, इतिहास के पूरे पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन करें। पाठ्यक्रम के अनुसार क्रम से पूर्व में पूछे गए प्रश्नों का अवलोकन करें। इससे यह पता चलता है कि कौन-सा

टॉपिक और टॉपिक का कौन-सा भाग महत्त्वपूर्ण है? जो टॉपिक सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हैं अर्थात् जिससे प्राय: प्रत्येक वर्ष किसी न किसी रूप में प्रश्न अवश्य पूछे गए हैं उसे Grade-A में रखें। इसके बाद जिस टॉपिक से ज़्यादा प्रश्न पूछे गए हैं उसे Grade-B में और सबसे कम पूछे गए प्रश्नों वाले टॉपिक को Grade-C में रखें। इस प्रकार इन श्रेणियों के अनुसार पाठ्यक्रम को रखते हुए हम अपना एक अलग 'आदर्श पाठ्यक्रम' तैयार कर सकते हैं। अब इस आदर्श पाठ्यक्रम के अनुसार तैयारी कर हम सफलता की ओर पहला कदम बढ़ा सकते हैं।

2. अब सवाल उठता है कि क्या इस पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण अध्ययन किया जाए? इस संबंध में यह जान लेना ज़रूरी है कि वर्तमान परीक्षा प्रणाली में कुछ का अध्ययन कर और कुछ को छोड़कर सफलता की बात सोचना बेमानी है। अत: तैयारी का एक ही कारगर तरीका हो सकता है, वह यह कि आप कुछ विषयों पर विशेषज्ञतापूर्वक तरीके से सब कुछ जानते हों और सभी विषयों पर कुछ न कुछ अवश्य जानते हों (Something about everything and everything about something)। अत: हमें चयन यह नहीं करना है कि कितना पढ़ना है और कितना छोड़ देना है, बल्कि यह करना है कि कितना पाठ्यक्रम विस्तार व गहराई से पढ़ना है और कितना साधारण दृष्टि से पढ़ना है।

◆ तैयारी की प्रक्रिया

1. सम्पूर्ण तैयारी की प्रक्रिया प्रश्न-पत्र के अनुरूप तीन भागों में बाँटी जा सकती है - 1. मानचित्र आधारित प्रश्न (50 अंक), 2. टिप्पणी आधारित प्रश्न (15 × 10 = 150 अंक), 3. लघु उत्तरीय प्रश्न (300 अंक)।

प्रश्नपत्र-1, खण्ड 'क' प्राचीन भारत

- **मानचित्र अध्ययन:** यह प्रश्न-पत्र का सबसे अंकदायी एवं सरल प्रश्न है किन्तु इसके लिये सूक्ष्म और सतत् अभ्यास की ज़रूरत है।
- इस प्रश्न की तैयारी के लिये आपको कक्षा में UPSC परीक्षा में मिलने वाले मानचित्र पर अभ्यास कराया जाएगा और लगभग 200 स्थलों के विवरण के साथ उनके स्थान को भी चिह्नित किया जाएगा।

टिप्पणी आधारित प्रश्न

ऐसी धारणा है कि टिप्पणी की तैयारी नहीं की जा सकती किन्तु यह धारणा निर्मूल है। वास्तविकता तो यह है कि टिप्पणी आधारित प्रश्नों की तैयारी की जाती है और इसके लिये एक विशिष्ट रणनीति की ज़रूरत होती है। नियमित कक्षा कार्यक्रम में आपको सभी खंडों की टिप्पणी की अलग से तैयारी कराई जाएगी तथा टिप्पणी लेखन शैली का अभ्यास कराया जाएगा।

दीर्घ एवं लघु उत्तरीय प्रश्न

- सभी खण्डों के दीर्घ एवं लघु उत्तरीय प्रश्नों को हल करने के लिये गहन, विश्लेषणात्मक और तार्किक दृष्टि से अध्ययन करने की ज़रूरत होती है।
- इसकी तैयारी के लिये आपको नियमित कक्षा कार्यक्रम में पाठ्यक्रम के अनुसार Topics का बिन्दुवार विश्लेषण कराया जाएगा। कक्षा में सर्वप्रथम संबंधित अध्याय के पूर्व में पूछे गए प्रश्नों की चर्चा की जाएगी और इस बात पर भी चर्चा होगी कि उक्त अध्याय से और कितने संभावित प्रश्न बन सकते हैं। तत्पश्चात् कक्षा में अध्याय का बिन्दुवार विश्लेषण करते हुए क्लास नोट्स तैयार कराया जाएगा। यह क्लास नोट्स आपको अन्य अभ्यर्थियों से विशिष्ट बनाने में सक्षम होगा।
- दीर्घ एवं लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर में कार्य-कारण संबंधों पर आधारित विश्लेषणपरक दृष्टिकोण को विशेष महत्त्व दिया जाता है। आपमें इस दृष्टिकोण का विकास नियमित कक्षा कार्यक्रम द्वारा किया जाएगा।

उत्तर लेखन शैली

- मुख्य परीक्षा में सफलता आपकी 'उत्तर लेखन शैली' पर टिकी होती है। प्राय: ऐसा देखने में आता है कि कुछ अभ्यर्थी बहुत अच्छी तैयारी और सभी तथ्यों को लिखने के बावजूद अच्छे अंक प्राप्त नहीं कर पाते। इसका प्रमुख कारण उनका परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों का विश्लेषणात्मक उत्तर न लिखना होता है। दरअसल मुख्य परीक्षा में तथ्यों की जानकारी की अपेक्षा नहीं की जाती है, बल्कि तथ्यों के आधार पर प्रश्न के व्यावहारिक विश्लेषण की दरकार होती है।
- इस बात को निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है। "उत्तरवैदिक काल में गोत्र बहिर्गमन प्रथा की शुरुआत हुई। यह एक तथ्य है। अब यदि आप उत्तरवैदिक काल की सामाजिक दशा के तहत महज़ इस तथ्य का उल्लेख करेंगे तो परीक्षक की नज़र में आप सतही अभ्यर्थी का दर्जा पाएंगे और यदि इस तथ्य को लिखने के बाद यह भी बताएँ कि गोत्र बहिर्गमन की प्रथा क्यों शुरू हुई? यह वस्तुत: सामाजिक एवं राजनीतिक संबंधों के विस्तार की एक प्रक्रिया थी। अब इसके माध्यम से ऐसे व्यक्तियों से संबंध होने लगे जो अभी तक एक-दूसरे से अलग थे। इस प्रकार दूरदराज़ के क्षेत्रों में आर्यों का गमन हुआ।" इस प्रकार के लेखन से परीक्षक को पता चल जाएगा कि अभ्यर्थी को विषय में गहराई तथा उसकी व्यावहारिकता की भी सम्पूर्ण जानकारी है और आपको अन्य अभ्यर्थियों की तुलना में ज़्यादा अंक प्राप्त होंगे।
- उत्तर लेखन में तीन गुण होने आवश्यक हैं - स्पष्टता, क्रमबद्धता एवं प्रामाणिकता।
- लेखन शैली ऐसी होनी चाहिये कि आपकी उत्तर पुस्तिका में आपके और परीक्षक के बीच द्विपक्षीय संबंध विकसित हो जाएँ। इस लेखन शैली का विकास आपको कक्षा में कराया जाएगा।
- उत्तर लिखने से पहले उत्तर-प्रारूप अवश्य बनाएँ। इससे समय की बचत तो होगी ही आपके उत्तर में क्रमबद्धता का गुण भी आ जाएगा।
- अपने उत्तर में मानचित्र, आरेख का भी पर्याप्त समावेश करें।

- 'टिप्पणी' वाले उत्तर को किसी भी स्थिति में निर्धारित शब्द सीमा से ज़्यादा न होने दें।
- उत्तर लेखन शैली का नियमित अभ्यास आपको कक्षा में कराया जाएगा। सम्पूर्ण कक्षा कार्यक्रम करने के उपरान्त आपकी लेखन शैली इस प्रकार की हो जाएगी कि आप जटिल से जटिल प्रश्नों को भी चुटकी बजाते हल करने में पूर्ण समर्थ होंगे।
- एक बात ध्यान रखने की है – प्रश्न को कई बार पढ़ें और फिर प्रश्न के अन्त में लिखे निम्न शब्दों पर विशेष ध्यान दें – समीक्षा/आलोचनात्मक मूल्यांकन, विवेचन/विश्लेषण/प्रकाश डालिये।
- **समीक्षा कीजिये** – सबल व निर्बल दोनों पक्षों की विवेचना करनी है।
- **आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये** – समीक्षा वाला अंश।
- **विश्लेषण कीजिये** – तथ्य के विभिन्न पहलुओं का तुलनात्मक विवेचन करना।
- **प्रकाश डालिये** – विभिन्न पक्षों पर विचार करते हुए उसकी विशिष्टता बताना।
- **विवेचन/व्याख्या** – संबंधित पहलू का सविस्तार वर्णन करना है।

आदर्श पाठ्यक्रम (My Syllabus)

प्राचीन भारत (Ancient India)

Grade "A" – Topic 1, 3, 5, 7, 10, 12
Grade "B" – Topic 6, 8, 9
Grade "C" – Topic 2, 4, 11

मध्यकालीन भारत (Medieval India)

Grade "A" – Topic 13, 16, 17, 20, 21
Grade "B" – Topic 14, 19, 22, 23
Grade "C" – Topic 15, 18, 24

आधुनिक भारत (Modern India)

Grade "A" – Topic 1, 2, 3, 4, 9
Grade "B" – Topic 5, 6, 8, 10, 11, 13
Grade "C" – Topic 7, 12, 14, 15

विश्व इतिहास (World History)

Grade "A" – Topic 16, 17, 19, 26, 27
Grade "B" – Topic 18, 21, 22, 23
Grade "C" – Topic 20, 24, 25

पाठ्यक्रम की अवधि

Ancient India	—	35	140 Days
Medieval India	—	30	
Modern India	—	40	
World History	—	35	

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) एवं उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPCS) का पाठ्यक्रम

इतिहास (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न-पत्र-1

1. **स्रोत:** पुरातात्विक स्रोत: अन्वेषण, उत्खनन, पुरालेखविद्या, मुद्राशास्त्र, स्मारक, साहित्य स्रोत। स्वदेशी: प्राथमिक व द्वितीयक; कविता, विज्ञान साहित्य, साहित्य, क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य, धार्मिक साहित्य। विदेशी वर्णन : यूनानी, चीनी एवं अरब लेखक
2. **प्रागैतिहास एवं आद्य इतिहास:** भौगोलिक कारक, शिकार एवं संग्रहण (पुरापाषाण एवं मध्यपाषाण युग); कृषि का आरंभ (नवपाषाण एवं ताम्रपाषाण युग)।
3. **सिंधु घाटी सभ्यता:** उद्गम, काल, विस्तार, विशेषताएँ, पतन, अस्तित्त्व एवं महत्त्व, कला एवं स्थापत्य।
4. **महापाषाणयुगीन संस्कृतियाँ:** सिंधु से बाहर पशुचारण एवं कृषि संस्कृतियों का विस्तार, सामुदायिक जीवन का विकास, बस्तियाँ, कृषि का विकास, शिल्पकर्म, मृदभांड एवं लौह उद्योग।
5. **आर्य एवं वैदिक काल:** भारत में आर्यों का प्रसार। वैदिक काल: धार्मिक एवं दार्शनिक साहित्य; ऋग्वैदिक काल से उत्तर वैदिक काल तक हुए रूपांतरण; राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन; वैदिक युग का महत्त्व; राजतंत्र एवं वर्ण व्यवस्था का क्रम विकास।
6. **महाजनपद काल:** महाजनपदों का निर्माण : गणतंत्रीय एवं राजतंत्रीय; नगर केंद्रों का उद्भव; व्यापार मार्ग, आर्थिक विकास; टंकण (सिक्का ढलाई); जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म का प्रसार; मगधों एवं नंदों का उद्भव।

   ईरानी एवं मकदूनियाई आक्रमण एवं उनके प्रभाव।
7. **मौर्य साम्राज्य:** मौर्य साम्राज्य की नींव, चंद्रगुप्त, कौटिल्य और अर्थशास्त्र; अशोक; धर्म की संकल्पना; धर्मादेश; राज्य व्यवस्था; प्रशासन; अर्थ-व्यवस्था; कला, स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प; विदेशी संपर्क; धर्म; धर्म का प्रसार; साहित्य।

   साम्राज्य का विघटन; शुंग एवं कण्व।
8. **उत्तर मौर्य काल (भारत-यूनानी, शक, कुषाण, पश्चिमी क्षत्रप):** बाहरी विश्व से संपर्क; नगर-केंद्रों का विकास, अर्थव्यवस्था, टंकण, धर्मों का विकास, महायान, सामाजिक दशाएँ, कला, स्थापत्य, संस्कृति, साहित्य एवं विज्ञान।
9. **प्रारंभिक राज्य एवं समाज; पूर्वी भारत, दकन एवं दक्षिण भारत में:** खारवेल, सातवाहन, संगमकालीन तमिल राज्य; प्रशासन, अर्थव्यवस्था, भूमि-अनुदान, टंकण, व्यापारिक श्रेणियाँ एवं नगर केंद्र; बौद्ध केंद्र, संगम साहित्य एवं संस्कृति, कला एवं स्थापत्य।
10. **गुप्त वंश, वाकाटक एवं वर्धन वंश:** राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन, आर्थिक दशाएँ, गुप्तकालीन टंकण, भूमि अनुदान, नगर केंद्रों का

पतन, भारतीय सामंतशाही, जाति प्रथा, स्त्री की स्थिति, शिक्षा एवं शैक्षिक संस्थाएँ, नालंदा, विक्रमशिला एवं वल्लभी, साहित्य, विज्ञान, कला एवं स्थापत्य।

11. **गुप्तकालीन क्षेत्रीय राज्य:** कदंब वंश, पल्लव वंश, बादामी का चालुक्य वंश; राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन, व्यापारिक श्रेणियाँ, साहित्य; वैष्णव एवं शैव धर्मों का विकास। तमिल भक्ति आंदोलन, शंकराचार्य; वेदांत, मंदिर संस्थाएँ एवं मंदिर स्थापत्य; पाल वंश, सेन वंश, राष्ट्रकूट वंश, परमार वंश, राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन; सांस्कृतिक पक्ष। सिंध के अरब विजेता; अलबरूनी, कल्याणी का चालुक्य वंश, चोल वंश, होयसल वंश, पांड्य वंश, राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन; स्थानीय शासन; कला एवं स्थापत्य का विकास, धार्मिक संप्रदाय, मंदिर एवं मठ संस्थाएँ, अग्रहार वंश, शिक्षा एवं साहित्य, अर्थव्यवस्था एवं समाज।

12. **प्रारंभिक भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के प्रतिपाद्य (Themes infarly Indian Cultural History):** भाषाएँ एवं मूलग्रंथ, कला एवं स्थापत्य के क्रम विकास के प्रमुख चरण, प्रमुख दार्शनिक चिंतक एवं शाखाएँ, विज्ञान एवं गणित के क्षेत्र में विचार।

13. **प्रारंभिक मध्यकालीन भारत, 750-1200**
    - राज्य व्यवस्था : उत्तरी भारत एवं प्रायद्वीप में प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रम, राजपूतों का उद्‌गम एवं उदय।
    - चोल वंश : ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं समाज
    - भारतीय सामंतशाही
    - कृषि अर्थव्यवस्था एवं नगरीय बस्तियाँ
    - व्यापार एवं वाणिज्य
    - समाज : ब्राह्मण की स्थिति एवं नई सामाजिक व्यवस्था
    - स्त्री की स्थिति
    - भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

14. **भारत की सांस्कृतिक परंपरा, 750-1200**
    - दर्शन: शंकराचार्य एवं वेदांत, रामानुज एवं विशिष्टाद्वैत, मध्व एवं ब्रह्म-मीमांसा।
    - धर्म : धर्म के स्वरूप एवं विशेषताएँ, तमिल भक्ति, संप्रदाय, भक्ति का विकास, इस्लाम एवं भारत में इसका आगमन, सूफी मत।
    - साहित्य : संस्कृत साहित्य, तमिल साहित्य का विकास, नवविकासशील भाषाओं का साहित्य, कल्हण की राजतरंगिणी, अलबरूनी का इंडिया।
    - कला एवं स्थापत्य : मंदिर स्थापत्य, मूर्तिशिल्प, चित्रकला।

15. **तेरहवीं शताब्दी**
    - दिल्ली सल्तनत की स्थापना : गोरी के आक्रमण-गोरी की सफलता के पीछे कारक।
    - आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिणाम।
    - दिल्ली सल्तनत की स्थापना एवं प्रारंभिक तुर्क सुल्तान।
    - सुदृढ़ीकरण : इल्तुतमिश और बलबन का शासन।

16. **चौदहवीं शताब्दी**
    - खिलजी क्रांति
    - अलाउद्दीन खिलजी : विजय एवं क्षेत्र-प्रसार, कृषि एवं आर्थिक उपाय।
    - मुहम्मद तुगलक : प्रमुख प्रकल्प (Project), कृषि उपाय, मुहम्मद तुगलक की अफसरशाही।
    - फिरोज तुगलक : कृषि उपाय, सिविल इंजीनियरी एवं लोक निर्माण में उपलब्धियाँ, दिल्ली सल्तनत का पतन, विदेशी संपर्क एवं इब्नबतूता का वर्णन।

17. **तेरहवीं एवं चौदहवीं शताब्दी का समाज, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था**
    - समाज, ग्रामीण समाज की रचना, शासी वर्ग, नगर निवासी, स्त्री, धार्मिक वर्ग, सल्तनत के अंतर्गत जाति एवं दास प्रथा, भक्ति आन्दोलन, सूफी आन्दोलन।
    - संस्कृति : फारसी साहित्य, उत्तर भारत की क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य, दक्षिण भारत की भाषाओं का साहित्य, सल्तनत स्थापत्य एवं नए स्थापत्य रूप, चित्रकला, सम्मिश्र संस्कृति का विकास।
    - अर्थव्यवस्था : कृषि उत्पादन, नगरीय अर्थव्यवस्था एवं कृषित्तर उत्पादन का उद्‌भव, व्यापार एवं वाणिज्य।

18. **पंद्रहवीं एवं प्रारंभिक सोलहवीं शताब्दी- राजनीतिक घटनाक्रम एवं अर्थव्यवस्था**
    - प्रांतीय राजवंशों का उदय: बंगाल, कश्मीर (जैनुल आबदीन), गुजरात, मालवा, बहमनी।
    - विजयनगर साम्राज्य
    - लोदी वंश
    - मुगल साम्राज्य, पहला चरण : बाबर एवं हुमायूँ
    - सूर साम्राज्य : शेरशाह का प्रशासन
    - पुर्तगाली औपनिवेशिक प्रतिष्ठान

19. **पंद्रहवीं एवं प्रारंभिक सोलहवीं शताब्दी : समाज एवं संस्कृति**
    - क्षेत्रीय सांस्कृतिक विशिष्टताएँ
    - साहित्यिक परंपराएँ
    - प्रांतीय स्थापत्य
    - विजयनगर साम्राज्य का समाज, संस्कृति, साहित्य और कला।

20. **अकबर**
    - विजय एवं साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण
    - जागीर एवं मनसब व्यवस्था की स्थापना
    - राजपूत नीति
    - धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण का विकास, सुलह-ए-कुल का सिद्धांत एवं धार्मिक नीति।
    - कला एवं प्रौद्योगिकी को राजदरबारी संरक्षण।

21. **सत्रहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य**
    - जहाँगीर, शाहजहाँ एवं औरंगज़ेब की प्रमुख प्रशासनिक नीतियाँ
    - साम्राज्य एवं ज़मींदार

- जहाँगीर, शाहजहाँ एवं औरंगज़ेब की धार्मिक नीतियाँ
- मुगल राज्य का स्वरूप
- उत्तर सत्रहवीं शताब्दी का संकट एवं विद्रोह
- अहोम साम्राज्य
- शिवाजी एवं प्रारंभिक मराठा राज्य

22. **सोलहवीं एवं सत्रहवीं शताब्दी में अर्थव्यवस्था एवं समाज**
- जनसंख्या, कृषि उत्पादन, शिल्प उत्पादन
- नगर, डच, अंग्रेज़ी एवं फ्राँसीसी कंपनियों के माध्यम से यूरोप के साथ वाणिज्य : व्यापार क्रांति।
- भारतीय व्यापारी वर्ग, बैंकिंग, बीमा एवं ऋण प्रणालियाँ
- किसानों की दशा, स्त्रियों की दशा
- सिख समुदाय एवं खालसा पंथ का विकास

23. **मुगल साम्राज्यकालीन संस्कृति**
- फारसी इतिहास एवं अन्य साहित्य
- हिन्दी एवं अन्य धार्मिक साहित्य
- मुगल स्थापत्य
- मुगल चित्रकला
- प्रांतीय स्थापत्य एवं चित्रकला
- शास्त्रीय संगीत
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

24. **अठारहवीं शताब्दी**
- मुगल साम्राज्य के पतन के कारक
- क्षेत्रीय सामंत देश: निज़ाम का दकन, बंगाल, अवध
- पेशवा के अधीन मराठा उत्कर्ष
- मराठा राजकोषीय एवं वित्तीय व्यवस्था
- अफगान शक्ति का उदय, पानीपत का युद्ध-1761
- ब्रिटिश विजय की पूर्व संध्या में राजनीति, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था की स्थिति।

प्रश्न-पत्र-2

1. **भारत में यूरोप का प्रवेश:** प्रारंभिक यूरोपीय बस्तियाँ; पुर्तगाली एवं डच, अंग्रेज़ी एवं फ्राँसीसी ईस्ट इंडिया कंपनियाँ; आधिपत्य के लिये उनके युद्ध; कर्नाटक युद्ध; बंगाल- अंग्रेज़ों एवं बंगाल के नवाब के बीच संघर्ष; सिराज और अंग्रेज़; प्लासी का युद्ध; प्लासी का महत्त्व।

2. **भारत में ब्रिटिश प्रसार:** बंगाल - मीर जाफर एवं मीर कासिम; बक्सर का युद्ध; मैसूर, मराठा; तीन अंग्रेज़-मराठा युद्ध; पंजाब

3. **ब्रिटिश राज की प्रारंभिक संरचना:** प्रारंभिक प्रशासनिक संरचना; द्वैधशासन से प्रत्यक्ष नियंत्रण तक; रेगुलेटिंग एक्ट (1773); पिट्स इंडिया एक्ट (1784); चार्टर एक्ट (1833); मुक्त व्यापार का स्वर एवं ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का बदलता स्वरूप; अंग्रेज़ी उपयोगितावादी और भारत।

4. **ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का आर्थिक प्रभाव**
- ब्रिटिश भारत में भूमि - राजस्व बंदोबस्त; स्थायी बंदोबस्त; रैयतवाड़ी बंदोबस्त; महालवाड़ी बंदोबस्त; राजस्व प्रबंध का आर्थिक प्रभाव; कृषि का वाणिज्यीकरण; भूमिहीन कृषि श्रमिकों का उदय; ग्रामीण समाज का परिक्षीणन।
- पारंपरिक व्यापार एवं वाणिज्य का विस्थापन; अनौद्योगीकरण; पारंपरिक शिल्प की अवनति; धन का अपवाह; भारत का आर्थिक रूपांतरण; टेलीग्राफ एवं डाक सेवाओं समेत रेल पथ एवं संचार जाल; ग्रामीण भीतरी प्रदेश में दुर्भिक्ष एवं गरीबी; यूरोपीय व्यापार उद्यम एवं इसकी सीमाएँ।

5. **सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास:** स्वदेशी शिक्षा की स्थिति; इसका विस्थापन; प्राच्यविद्-आंग्लविद् विवाद, भारत में पश्चिमी शिक्षा का प्रादुर्भाव; प्रेस, साहित्य एवं लोकमत का उदय; आधुनिक मातृभाषा साहित्य का उदय; विज्ञान की प्रगति; भारत में क्रिश्चियन मिशनरी के कार्यकलाप।

6. **बंगाल एवं अन्य क्षेत्रों में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन:** राममोहन राय, ब्रह्म आंदोलन; देवेन्द्रनाथ टैगोर; ईश्वरचन्द्र विद्यासागर; युवा बंगाल आंदोलन; दयानंद सरस्वती; भारत में सती, विधवा विवाह, बाल विवाह आदि समेत सामाजिक सुधार आन्दोलन; आधुनिक भारत के विकास में भारतीय पुनर्जागरण का योगदान; इस्लामी पुनरुद्धार वृत्ति- फराइजी एवं वहाबी आन्दोलन।

7. **ब्रिटिश शासन के प्रति भारत की अनुक्रिया:** रंगपुर ढींग (1783), कोल विद्रोह (1832), मालाबार में मोपला विद्रोह (1841-1920), सन्थाल हुल (1855), नील विद्रोह (1859-60), दकन विप्लव (1875), एवं मुंडा उल्गुलान (1899-1900) समेत 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में हुए किसान आंदोलन एवं जनजातीय विप्लव; 1857 का महाविद्रोह- उद्‌गम, स्वरूप, असफलता के कारण, परिणाम; पश्च 1857 काल में किसान विप्लव के स्वरूप में बदलाव; 1920 और 1930 के दशकों में हुए किसान आंदोलन।

8. **भारतीय राष्ट्रवाद के जन्म के कारक:** संघों की राजनीति; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बुनियाद; कांग्रेस के जन्म के संबंध में सेफ्टी वाल्व का पक्ष; प्रारंभिक कांग्रेस के कार्यक्रम एवं लक्ष्य; प्रारंभिक कांग्रेस नेतृत्व की सामाजिक रचना; नरम दल एवं गरम दल; बंगाल का विभाजन (1905); बंगाल में स्वदेशी आन्दोलन; स्वदेशी आन्दोलन के आर्थिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य; भारत में क्रांतिकारी उग्रपंथ का आरंभ।

9. **गांधी का उदय:** गांधी के राष्ट्रवाद का स्वरूप; गांधी का जनाकर्षण; रौलेट सत्याग्रह; खिलाफत आंदोलन; असहयोग आंदोलन समाप्त होने के बाद से सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रारंभ होने तक की राष्ट्रीय राजनीति, सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दो चरण; साइमन कमीशन; नेहरू रिपोर्ट; गोलमेज़ परिषद; राष्ट्रवाद और किसान आंदोलन; राष्ट्रवाद एवं श्रमिक वर्ग आंदोलन; महिला एवं भारतीय

युवा तथा भारतीय राजनीति में छात्र (1885-1947); 1937 का चुनाव तथा मंत्रालयों का गठन; क्रिप्स मिशन; भारत छोड़ो आन्दोलन; वैवेल योजना; कैबिनेट मिशन।

10. **औपनिवेशिक:** भारत में 1858 और 1935 के बीच सांविधानिक घटनाक्रम।

11. **राष्ट्रीय आन्दोलन की अन्य कड़ियाँ:** क्रांतिकारी; बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र, यू.पी., मद्रास प्रदेश, भारत से बाहर, वामपक्ष; कांग्रेस के अंदर का वामपक्ष : जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, कांग्रेस समाजवादी पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, अन्य वाम दल।

12. **अलगाववाद की राजनीति:** मुस्लिम लीग; हिन्दू महासभा; सांप्रदायिकता एवं विभाजन की राजनीति; सत्ता का हस्तांतरण; स्वतंत्रता।

13. **एक राष्ट्र के रूप में सुदृढ़ीकरण:** नेहरू की विदेश नीति; भारत और उसके पड़ोसी (1947-1964); राज्यों का भाषावाद पुनर्गठन (1935-1947); क्षेत्रीयतावाद एवं क्षेत्रीय असमानता; भारतीय रियासतों का एकीकरण; निर्वाचन की राजनीति में रियासतों के नरेश (प्रिंस); राष्ट्रीय भाषा का प्रश्न।

14. **1947 के बाद जाति एवं नृजातित्त्व:** उत्तर-औपनिवेशिक निर्वाचन-राजनीति में पिछड़ी जातियाँ एवं जनजातियाँ; दलित आंदोलन।

15. **आर्थिक विकास एवं राजनीतिक परिवर्तन:** भूमि सुधार; योजना एवं ग्रामीण पुनर्रचना की राजनीति; उत्तर औपनिवेशिक भारत में पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण नीति; विज्ञान की तरक्की।

16. **प्रबोध एवं आधुनिक विचार**
- प्रबोध के प्रमुख विचार : कांट, रूसो
- उपनिवेशों में प्रबोध - प्रसार
- समाजवादी विचारों का उदय (मार्क्स तक); मार्क्स के समाजवाद का प्रसार

17. **आधुनिक राजनीति के मूल स्रोत**
- यूरोपीय राज्य प्रणाली
- अमेरिकी क्रांति एवं संविधान
- फ्राँसीसी क्रांति एवं उसके परिणाम, 1789-1815
- अब्राहम लिंकन के संदर्भ के साथ अमेरिकी सिविल युद्ध एवं दासता का उन्मूलन
- ब्रिटिश गणतंत्रात्मक राजनीति, 1815-1850; संसदीय सुधार, मुक्त व्यापारी, चार्टरवादी।

18. **औद्योगीकरण**
- अंग्रेज़ी औद्योगिक क्रांति : कारण एवं समाज पर प्रभाव।
- अन्य देशों में औद्योगीकरण : यू.एस.ए., जर्मनी, रूस, जापान।
- औद्योगीकरण एवं भूमंडलीकरण।

19. **राष्ट्र राज्य प्रणाली**
- 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद का उदय
- राष्ट्रवाद : जर्मनी और इटली में राज्य निर्माण।
- पूरे विश्व में राष्ट्रीयता के आविर्भाव के समक्ष साम्राज्यों का विघटन।

20. **साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद**
- दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया
- लातिनी अमेरिका एवं दक्षिण अफ्रीका
- ऑस्ट्रेलिया
- साम्राज्यवाद एवं मुक्त व्यापार : नवसाम्राज्यवाद का उदय।

21. **क्रांति एवं प्रतिक्रांति**
- 19वीं शताब्दी की यूरोपीय क्रांतियाँ
- 1917-1921 की रूसी क्रांति
- फासीवाद प्रतिक्रांति, इटली एवं जर्मनी
- 1949 की चीनी क्रांति

22. **विश्व युद्ध**
- संपूर्ण युद्ध के रूप में प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध : समाजीय निहितार्थ
- प्रथम विश्व युद्ध : कारण एवं परिणाम
- द्वितीय विश्व युद्ध : कारण एवं परिणाम

23. **द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का विश्व**
- दो शक्तियों का आविर्भाव
- तृतीय विश्व एवं गुटनिरपेक्षता का आविर्भाव
- संयुक्त राष्ट्रसंघ एवं वैश्विक विवाद

24. **औपनिवेशिक शासन से मुक्ति**
- लातिनी अमेरिका - बोलिवर
- अरब विश्व - मिस्र
- अफ्रीका - रंगभेद से गणतंत्र तक
- दक्षिण-पूर्व एशिया - वियतनाम

25. **वि-औपनिवेशीकरण एवं अल्पविकास**
- विकास के बाधक कारक : लातिनी अमेरिका, अफ्रीका।

26. **यूरोप का एकीकरण**
- युद्धोत्तर स्थापनाएँ NATO एवं यूरोपीय समुदाय (यूरोपियन कम्युनिटी)
- यूरोपीय समुदाय (यूरोपियन कम्युनिटी) का सुदृढ़ीकरण एवं प्रसार
- यूरोपीय संघ

27. **सोवियत यूनियन का विघटन एवं एक ध्रुवीय विश्व का उदय**
- सोवियत साम्यवाद एवं सोवियत यूनियन को निपात तक पहुँचाने वाले कारक, 1985-1991
- पूर्वी यूरोप में राजनीतिक परिवर्तन 1989-2001
- शीत युद्ध का अंत एवं अकेली महाशक्ति के रूप में US का उत्कर्ष।

दृष्टि The Vision

करेंट अफेयर्स टुडे

सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी को समर्पित मासिक पत्रिका

पत्रिका की प्रमुख विशेषताएँ

- संपूर्ण समसामयिक घटनाक्रम
- विशेषज्ञों की रणनीतिक सलाह
- टॉपर से बातचीत
- संपूर्ण योजना, कुरुक्षेत्र (अंग्रेज़ी तथा हिंदी) समेत महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं का सार
- मुख्य परीक्षा हेतु समसामयिक मुद्दों पर संभावित प्रश्नोत्तर
- महत्त्वपूर्ण समसामयिक मुद्दों पर आलेख
- महत्त्वपूर्ण संगठन/संस्थाएँ
- निबंध लेखन का अभ्यास
- प्रारंभिक परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न
- साक्षात्कार की तैयारी से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा
- माइंड मैप एवं मानचित्रों से सीखें

और भी बहुत कुछ ...

विभिन्न राज्यों से जुड़े

हिंदी माध्यम के IAS टॉपर

क्या कहते हैं इस पत्रिका के बारे में...

निशांत जैन

IAS-राजस्थान कैडर

"'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' स्वयं में एक अनूठी और बहुआयामी पत्रिका है। इसका सभी विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध होना प्रतियोगिता जगत की एक बड़ी ज़रूरत पूरी करता है। मैंने खुद इस पत्रिका का लाभ उठाया है। सिविल सेवा परीक्षा पर ही पूरी तरह केन्द्रित यह पत्रिका कई मायनों में विशिष्ट है। इंटरव्यू खंड, निबंध खंड, एथिक्स आदि पर विशेष ध्यान देना इस पत्रिका को बाकी पत्रिकाओं से अलग बनाता है। समसामयिक घटनाओं का सिविल सेवा परीक्षा के नज़रिये से विश्लेषण और फिर उनकी बिन्दुवार प्रस्तुति बेहद उपयोगी और प्रासंगिक है।

'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' आपकी सफलता में सार्थक भूमिका निभाएगी, ऐसा मेरा विश्वास है।"

राजेन्द्र पेंसिया

IAS-उ.प्र. कैडर

"हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि पत्रिका कौन-सी पढ़ी जाए? इसके लिये सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, प्रामाणिक और सारगर्भित स्रोत 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' के माध्यम से मिलता है। इंटीग्रेटेड एप्रोच से तैयारी के लिये हिंदी माध्यम में ऐसी किसी पत्रिका का अभाव था जो प्रिलिम्स, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार की ज़रूरतों को पूरा कर सके। विकास दिव्यकीर्ति सर के मार्गदर्शन में यह पत्रिका निश्चित ही इन सभी मानकों पर खरी उतरती है। हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी गूगल ट्रांसलेटेड मैटीरियल पढ़ने की बजाय यह पत्रिका पढ़ें जो पूर्णतः मौलिक व अनुभवी टीम की मेहनत का परिणाम है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका उनके लिये निश्चित रूप से वरदान साबित होगी। शुभकामनाएँ।"

मनीष कुमार

(IPS)

"यह पत्रिका (दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे) हिन्दी माध्यम में उपलब्ध पाठ्यसामग्री की कमी को पूरा करने की एक गंभीर कोशिश है। इसके सभी खंडों का व्यवस्थित अध्ययन तैयारी को संपूर्णता प्रदान करता है। पत्रिका के 'समसामयिक मुद्दों पर संभावित प्रश्नोत्तर' खंड से मुझे मुख्य परीक्षा की तैयारी में विशेष मदद मिली थी।"

गंगा सिंह

(IAS)

"'मैं इस पत्रिका का नियमित पाठक रहा हूँ। हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के लिये यह पत्रिका बहुत उपयोगी साबित हो रही है। इस पत्रिका का आलेख खंड बेहद सराहनीय है। निबंध के लिये उद्धरण भी मैंने इसी पत्रिका से तैयार किये थे।"

प्रदीप कुमार

(IRS)

"'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' एक मानक पत्रिका है। पिछले दो अंकों में तो इसने 'गागर में सागर' भर दिया है। वस्तुतः बाज़ार में उपलब्ध स्तरहीन सामग्री ने अभ्यर्थियों को दिशाभ्रमित ही किया है। ऐसे में 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' ने विद्यार्थियों की राह आसान कर दी है।"

Drishti IAS

1.5+ Million subscribers

/DrishtiVideos | /DrishtiMediaVideos | /DrishtiIAS

Interview Guidance by Dr. Vikas Divyakirti

This series deals with a different set of questions in each episode that can be asked to any Civil Services aspirant in her interview.

Current News

This programme, anchored by Mr. Amrit Upadhyay, includes all the important news events of the previous week which is relevant solely from a Civil Service perspective.

Mock Interview

This series offers the opportunity for Civil Service aspirants to imagine themselves in an interview setting and going through the same questions helping them in the process to gauge the level of their preparation for the actual Personality Test.

To The Point (Short Notes)

"To The Point" is a program where exam-oriented material that is brief, succinct and to the point is provided to Civil Services aspirants.

Audio Article

The information provided in this series helps a Civil Services aspirant get a better understanding of select topics without the need for any coaching.

Today's G.K.

This program offers analysis and discussion of questions sourced from everyday news that may be asked in the UPSC exam in the form of a statement or otherwise factually in any other competitive exams.

YouTube/Drishti IAS

Scan the QR Code

CHAT NOW

दृष्टि The Vision

1800-121-6260 011-47532596 Login Register

एन.सी.ई.आर.टी. टेस्ट | कक्षा कार्यक्रम | डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम

टेस्ट सीरीज़ | करेंट अफेयर्स | दृष्टि मीडिया

तैयारी का वह हिस्सा जो किताबों से पूरा नहीं हो सकता, उसके लिये हम आपको आमंत्रित करते हैं

अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com/hindi

तैयारी की रणनीति	मेंस प्रैक्टिस प्रश्न	पी.सी.एस. परीक्षा की तैयारी
डेली न्यूज़ और एडिटोरियल (अंग्रेज़ी के प्रमुख समाचार पत्रों से)	राज्यसभा/लोकसभा टी.वी. डिबेट	पी.आर.एस. कैप्सूल्स
माइंड मैप	60 Steps to Prelims	टू द पॉइंट
फोरम	एन.सी.ई.आर.टी. टेस्ट	महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट्स की जिस्ट
डेली करेंट टेस्ट [योजना, कुरुक्षेत्र सहित अन्य महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं के टेस्ट]	ब्लॉग	यू-ट्यूब चैनल

रोज़ाना एक घंटा इस वेबसाइट पर गुज़ारिये और प्रिलिम्स से इंटरव्यू तक की अपनी तैयारी को मज़बूत आधार प्रदान कीजिये।

For any query please contact:

87501 87501, 011-47532596

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

दृष्टि पब्लिकेशन्स की प्रमुख पुस्तकें

641, Ist Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9 Ph.: 87501 87501, 011-47532596

E-mail: online@groupdrishti.com, *Website: www.drishtiias.com

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम
(Distance Learning Programme)

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आप घर बैठे 'दृष्टि' द्वारा तैयार परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री मंगवा सकते हैं। यह पाठ्य-सामग्री विशेष रूप से ऐसे अभ्यर्थियों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है जो दिल्ली आकर कक्षाएँ करने में असमर्थ हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सिविल सेवा और राज्य सेवा (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तराखंड पी.सी.एस.) परीक्षाओं की पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। यह पाठ्य-सामग्री प्रत्येक परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप है और इसे विभिन्न समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं समितियों की रिपोर्टों के माध्यम से अद्यतन (up-to-date) किया गया है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

सामान्य अध्ययन (प्रारंभिक परीक्षा) (19 बुकलेट्स) ₹10,000/-	**सामान्य अध्ययन** (मुख्य परीक्षा) (26 बुकलेट्स) ₹13,000/-
सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रारंभिक परीक्षा) (27 बुकलेट्स) ₹13,000/-	**सामान्य अध्ययन** (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (31 बुकलेट्स) ₹15,000/-
सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (39 बुकलेट्स) ₹17,500/-	**हिन्दी साहित्य** (वैकल्पिक विषय) (13 बुकलेट्स) ₹7,000/-
इतिहास (वैकल्पिक विषय) (12 बुकलेट्स) ₹7,000/-	**दर्शनशास्त्र** (वैकल्पिक विषय) (4 बुकलेट्स) ₹5,000/-

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (UPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (33 + 10 Booklets) ₹15,500/-	**सामान्य अध्ययन** (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (33 Booklets) ₹14,000/-

राजस्थान पी.सी.एस. (RAS/RTS) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(34 बुकलेट्स) ₹10,500/-

बिहार पी.सी.एस. (BPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(25 बुकलेट्स) ₹10,000/-

मध्य प्रदेश पी.सी.एस. (MPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 Booklets) ₹11,000/-

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 Booklets) ₹10,000/-

उत्तराखंड पी.सी.एस. (UKPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 Booklets) ₹11,000/-

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 Booklets) ₹10,000/-

छत्तीसगढ़ पी.सी.एस. (CGPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (35 + 6 Booklets) ₹15,500/-	**सामान्य अध्ययन** (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (35 Booklets) ₹14,000/-

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें 8448485520, 87501-87501, 011-47532596

पिछले दो दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

दृष्टि The Vision

किरण कौशल	अजय मिश्रा	लोकेश कुमार सिंह	प्रदीप राजपुरोहित	निशांत जैन	गंगा सिंह	प्रदीप कु. द्विवेदी
3rd Rank	5th Rank	10th Rank	13th Rank	13th Rank	33rd Rank	74th Rank

हिन्दी माध्यम में अब तक का सर्वश्रेष्ठ रैंक

रवि कु. सिहाग | अदित्य कु. झा | हरी शंकर | दिलखुश मीना | जगदीश बांगरवा | जगदीश कुमार | राहुल कु. सिंह | शीतल कुमारी | कमलेश मीना | भारत मनोज फतेसिंह | मिंटू लाल मीना | सचिन कुमार

सुनील कुमार | देवेंद्र प्रकाश मीना | ब्रज मोहन मीना | अनुप मीना | चेतराम मीना | सिद्धार्थ कु. मीना | विवेक कु. दोसाद | ज्योति शर्मा | अनिरुद्ध कुमार | अरविंद प्रताप सिंह | दिनेश कुमार यादव | अजय कुमार यादव

साक्षी गर्ग | राजीव कुमार चौधरी | बबीता रानी स्वैन | आदित्य कुमार झा | सोनल | प्रदीप कुमार द्विवेदी | आशुतोष शुक्ला | लाखन सिंह यादव | विकास मीणा | अनिल कुमार यादव | विजय सिंह गुर्जर | विकास सुंडा

मुकेश कुमार लुनायत | चेतन कुमार मीणा | हेमेंद्र कुमार मीणा | अक्षय कुमार टेमरावाल | कांता जांगिड | विक्रम गंगवार | अशोक कुमार | अनिल कुमार वर्मा | रतन दीप गुप्ता | पंकज कुमार मीणा | पवन कुमार यादव | निलेश कुमार केशरी

आशीष कुमार | मनोज कुमार रावत | हिमांशु यादव | संदीप कुमार मीणा | भूपेंद्र रावत | शिव सिंह मीना | कमलेश मीना | गौरव कुमार सिंह | कृष्णकांत पाठक | वंदना प्रेयशी | श्वेता सिंघल | श्रीमन शुक्ला

तरुण राठी | सूफिया फारुकी | राज कमल यादव | नीलिमा | उदित प्रकाश | किंजल सिंह | शचीन्द्र प्रताप सिंह | कौशलेन्द्र विक्रम सिंह | मुक्तानंद अग्रवाल | बलदेव पुरुषार्थ | नीतू कुमारी प्रसाद | नथमल डिडेल

मुकेश कुमार | ब्रह्मदेव तिवारी | दयानिधान पांडेय | मनीष कुमार | राजेश प्रधान | आर्द्रा अग्रवाल | रमेश वर्मा | अश्विनी मुदगल | नरेंद्र मीणा | मिथिलेश मिश्रा | गोविंद जयसवाल | अभिषेक सिंह

राहुल रंजन महिवाल | धनंजय सिंह भदौरिया | गिरवर दयाल सिंह | काना राम | शिल्पा गर्ग | दीपक आनंद | रूबल गुप्ता | आशीष सिंह | संगीता तेतरवाल | डॉ. विक्रांत पांडेय | कृष्णा वाजपेयी | सीमा त्रिपाठी

अजीत वसंत | वैभव श्रीवास्तव | अवनीश कुमार शरण | अशोक मीणा | नितीश कुमार | अनूप कुमार सिंह | मनोज कुमार | प्रदीप कुमार | रानू साहू | अमित कुमार | गौरव गांधी | नीलम रानी

विवेक अग्रवाल | दीपि अग्रवाल | अजय कुमार | मनिता मलिक | ब्रजेश संत | अभिषेक सिंह | पुष्पेंद्र कुमार | प्रतिभा पारिक | श्रद्धा जोशी | दीपक वर्णवाल | सुधांशुधर मिश्र | मोहित अग्रवाल